VOL- XI | ISSUE- VII | JULY | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

# पर्यटन गतिविधियां एवं भरतपुर गंतव्य स्थल

**प्रवीण कुमार**
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर
E-mail : nikitamina95@gmail.com

**विनोद सिंह**
आचार्य - भूगोल विभाग,
राजकीय डूँगर महाविद्यालय,
बीकानेर

## प्रस्तावना

पर्यटन मानव का प्राचीन और रूचिकर क्रियाकलापों का क्षेत्र रहा है, यह भूगोल विषय के साथ आरम्भिक काल से अनवरत रूप से जुड़ा हुआ है। जिसमें नये स्थानों की जानकारी ने मानव को जिज्ञासु प्रवृत्ति के रूप में गति प्रदान की जो मानव की जीवन निर्वाह से लेकर विलासिता तक जुड़ी हुई है पर्यटन आज भौगोलिक अध्ययन का महत्त्वपूर्ण बिन्दू बन गया है। जिसकी संरचना को मजबूत करने में आधुनिक संचार एवं परिवहन प्रणाली भी उपयुक्त योगदान दे रही है, इसके माध्यम से पर्यटन विश्वव्यापी हो गया है। यह कुछ स्थानों पर नवोदित उद्योग के रूप में विकसित हो चुका है। पर्यटन की वृहद् सोच के साथ ही अब इसके क्षेत्र का अत्यधिक विस्तार हो रहा है। इससे क्षेत्र की जनसंख्या का प्रत्येक भाग लाभान्वित हो रहा है पर्यटन, खेल, मनोरंजन, शिक्षा एवं चिकित्सा के साथ विभिन्न सम्बन्धों से युक्त हो गया है। शिक्षा प्रणाली में भी देशाटन या पर्यटन करना एक आवश्य शोध-विधि बन गया है। जिससे किसी भी शोध विषय के अध्ययन गुणात्मकता एवं सार्थकता की महत्ता बढ़ जाती है। पर्यटन वर्तमान एवं भावी स्वरूप व महत्व की ओर स्वतः ही इंगित करता है।

भरतपुर जिला, जो कि राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार कहलाता है, यह २६°२२' से २७°५०' उत्तरी अक्षांश तथा ७६°५३' से ७८°११' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह समुद्र तल से १८३ मीटर ऊपर स्थित है। अध्ययन क्षेत्र भरतपुर शहर राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शहर है। यह २७°१३' उत्तरी अक्षांश एवं ७७°३०' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।

स्रोत : www.google.com

यह भरतपुर जिले व नवनिर्मित संभाग का भी मुख्यालय है। यह शहर दिल्ली से १८० किमी. दूर है तथा राजस्थान की राजधानी जयपुर से १७८ किमी. दूर स्थित है। भरतपुर शहर की जनसंख्या जनगणना २०११ के अनुसार २५२३४२ है जिनमें से पुरुष और महिला क्रमशः १३३७८० और ११८५६२ है।

## साहित्य अवलोकन

गोडोविख, हसीकारा, कैरिसा, एलन, अब्राहम (२०२४) ने पर्यटन के गंतव्य समुदायों पर पड़ने वाले नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभावों का उल्लेख किया। हक, शिखा, हसनत, आरिफ एवं हामिद (२०२०) ने चीन के पर्यटन उद्योग पर कोरोना वायरस के प्रभावों का अध्ययन किया। पर्यटन उद्योग से सकल घरेलू उत्पाद के वर्तमान स्तर एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। ब्राउर, दिमित्रो एवं ट्राइव (२०१९) ने यू.के. सरकार द्वारा प्रदत्त वित्तपोषण का पर्यटन अनुसंधान पर प्रभाव दर्शाया। प्रमाणिक एवं इंगकादिजया (२०१८) ने पर्यटन गतिविधि के ग्रामीण क्षेत्र पर प्रभाव का आंकलन किया। प्रैट (२०१५) ने छोटे द्वीपीय विकासशील राज्यों (एसआईडीएस) पर पर्यटन के आर्थिक प्रभाव की तुलना का अध्ययन किया। झोंग, डेंग, सॉन्ग, पेइयी (२०११) ने १९८० के दशक के बाद

पर्यटन उद्योग के चीन में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण पर प्रभाव का वर्णन किया। कथूरिया (२०११) ने पर्यावरण पर्यटन को एक महत्त्वपूर्ण पक्ष माना। स्थानीय समुदाय आर्थिक विकास एवं प्राकृतिक संसाधनों के मध्य संतुलन कायम करने में संघर्षरत हैं। फैइसा, नसिया एवं तदास्से (२००८) ने पर्यटन के बाजार पर प्रभाव का अध्ययन किया। कैमार्डा एवं ग्रसनी (२००३) ने पर्यटन के लिए प्राकृतिक एवं मानव निर्मित पर्यावरण की अच्छी गुणवत्ता की आवश्यकता पर बल दिया है, साथ ही पर्यटन के प्रभावस्वरूप प्राकृतिक संसाधन नष्ट हो रहे हैं।

**अध्ययन के उद्देश्य**

वर्तमान अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. भरतपुर गंतव्य स्थल पर पर्यटक आगमन की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालना।
2. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन गतिविधि के प्रभावों के प्रत्यक्षीकरण का अन्वेषण करना।

**परिकल्पना**

- यह अध्ययन इस परिकल्पना के द्वारा निर्दिष्ट है कि भरतपुर गंतव्य-स्थल वासी पर्यटन के प्रभाव अनुभूत करते हैं।

**सूचना स्रोत एवं अध्ययन विधि**

- साहित्य एवं पर्यटन से सम्बन्धित प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों से आंकड़े लिए गए हैं। प्राथमिक स्रोतों में क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं प्रत्यक्ष अवलोकन तथा प्रश्नावली एवं साक्षात्कार से आंकडे संकलित किए गए हैं।
- भरतपुर शहर पर पर्यटन के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभावों के अध्ययन के लिए २०० लोगों के मध्य सर्वेक्षण किया गया है। जो विभिन्न आयु वर्ग (१७ से ५० वर्ष), शैक्षिक वर्ग (माध्यमिक से प्रोफेसनल डिग्री), आय वर्ग (३०००० से १००००० रूपये) के थे।

**महत्वपूर्ण पर्यटन केन्द्र एवं आकर्षण**

अपने अनूठे ऐतिहासिक व प्राकृतिक धरोहर के कारण यह शहर देश तथा प्रदेश में पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बन पडा है। यहाँ स्थित ऐतिहासिक भवन तथा प्राकृतिक अभ्यारण्य विश्व के तथा देश के पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। शायद ही इतिहास व प्रकृति का ऐसा अनूठा संयोग कहीं और देखने को मिले।

**(i) लोहागढ़ किला :**

भरतपुर शहर में स्थित यह किला अपने निर्माण के समय से ही अपने नाम को सार्थक करता है। अपने निर्माण के समय से ही यह अनेक आक्रमणों का प्रत्यक्षदर्शी रहा है। यह अनेकों अंग्रेज आक्रमणों को झेल चुका है। लोहागढ़ किले के ऊपर चार बार अंग्रेजों का आक्रमण हुआ लेकिन लम्बे संघर्ष के बाद भी यह अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाये रखने में सफल रहा है जिससे इसके नाम को सार्थकता मिली है। यह किला राज्य के अन्य किलों से बहुत भिन्न है। यह अपनी बेजोड स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। इस किले के चारों तरफ एक खाई है जो पानी से भरी रहती है। इससे दुश्मन किले तक पहुचने में नाकाम रहता है। इसके बुर्ज का निर्माण मृदा से इस प्रकार किया गया है जिससे इस पर तोप का भी असर नहीं होता है। महाराजा सूरजमल द्वारा अंग्रेजों और मुगलो पर विजय प्रतीक चिन्ह के रूप में किले के अन्तर किशोरी महल, महल खास, मोती महल, कोठी खास, जवाहर बुर्ज तथा फतह बुर्ज का निर्माण किया गया है। किले का मुख्य द्वार अष्ट धातु से निर्मित है जिस पर हाथियों की चित्रकारी की गई है।

**(ii) भरतपुर महल :**

भरतपुर शहर में स्थित यह महल मुगल तथा राजपूत स्थापत्य कला के संगम का बेजोड नमूना है। इसे विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न राजाओं ने अपने अनुसार बनाया था। इसकी छत तथा दीवारें सुन्दर वास्तुकला का महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसके मुख्य केन्द्रीय भाग में संग्रहालय का निर्माण किया गया है जिसमें दूसरी शताब्दी की कला को प्रदर्शित किया गया है। महल के केन्द्रीय भाग कमरा खास को म्यूजिम (संग्रहालय) में परिवर्तित किया गया है। इस संग्रहालय में कुछ बेजोड़ स्थापत्य कला के प्रतीक चिन्हों का संग्रह किया गया है। इन प्रतीक चिन्हों को यहाँ उनके काल के अनुसार जमाया गया है तथा साथ ही उनकी विशेषताओं का भी उल्लेख किया गया है जिससे इनकी ऐतिहासिक महत्ता को पर्यटक जान सके। इस संग्रहालय के अवलोकन मात्र से पर्यटक यहाँ के राज परिवार के शाही जीवन को महसूस कर सकते हैं।

**(iii) गंगा मंदिर :**

भरतपुर शहर में स्थित इस भव्य मन्दिर का निर्माण महाराजा बलवन्त सिंह ने सन् १८४५ में प्रारम्भ किया था। इसका निर्माण अद्वितीय तरीके से किया गया। इसके लिए राज्य के अधीन कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने अपने एक माह का वेतन इसके निर्माण को पूरा करने के लिए दान दिया है।

इसका मुख्य उद्देश्य इस मन्दिर के निर्माण में आम आदमी को जोड़ना था। यह मन्दिर अपनी भव्यता तथा बेजोड वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

**(iv) लक्ष्मण मंदिर**

भरतपुर शहर में स्थित यह मन्दिर भी अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। भरतपुर राजघराने के कुलदेवता के रूप में भगवान राम के छोटे भाई लक्ष्मण को पूजते है। इसी कारण राजपरिवार ने भरतपुर शहर में लक्ष्मण मन्दिर का निर्माण करवाया। यह मन्दिर अपन भव्यता, सुन्दर वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। इसकी दीवारों, दरवाजों तथा छत पर लक्ष्मण जी की जीवनी को दर्शाया गया है।

**(v) केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान :**

भरतपुर शहर में स्थित पक्षियों के स्वर्ग का यह केवलादेव नाम यहाँ स्थित केवलादेव मन्दिर से प्रसिद्ध हुआ। केवलादेव पार्क के मध्य में स्थित भगवान शिव का यह मंदिर है। इसके बाद यहाँ स्थित झील का नाम घना कहलाया। घना एक गहन वानस्पतिक वन क्षेत्र है। अंग्रेजों के समय में यह एक शिकार क्षेत्र था परन्तु १९५६ में इसे पक्षियों के लिए आरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया तथा बाद में इसे एक राष्ट्रीय पार्क के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। यह दर्जा इसे १९८० में दिया गया। हाल ही में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर घोषित किया है। यह पार्क एक आदर्श भौगोलिक अवस्थिति में स्थित है। यह भारत के मुख्य उत्तर दक्षिण उड्डयन मार्ग पर स्थित है। वैसे यह पार्क आकार में मात्र २९ कि.मी. क्षेत्र में फैला है परन्तु यह ३७५ से भी अधिक पक्षियों की प्रजाति अपने आप में समेटे हुए है।

**(vi) महाराजा सूरजमल मेमोरियल किशोरी महल, भरतपुर –**

महाराजा सूरजमल के पुराने महल (किशोरी महल लोहागढ़ किला) के एक हिस्से का जीर्णोद्धार, महाराजा सूरज मल की अश्वरोही धातु की मूर्ति, महाराजा सूरजमल और महारानी किशोरी की संगमरमर की मूर्तियाँ, संगमरमर और फाइबर की विभिन्न मूर्तियाँ और राहत पैनल प्रदर्शित हैं।

**(vii) जामा मस्जिद (भरतपुर) :**

भरतपुर की जामा मस्जिद भरतपुर की इमाम जामा मस्जिद के नाम से भी मशहूर है। यह जाट शासकों द्वारा निर्मित भारत की एकमात्र जामा मस्जिद है। भरतपुर जामा मस्जिद आगरा की जामा मस्जिद के समान मुगल शैली की बास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

आज जामा मस्जिद मुसलमानों की प्रार्थना स्थल और धार्मिक सभाओं के रूप में कार्य करती है। बच्चों के लिए एक मदरसा भी है, जहां विभिन्न पृष्ठभूमि के १०० बच्चे कुरान, हदीस और अन्य मुस्लिम धर्मग्रंथों को सीखने आते हैं।

**(viii) सरकारी संग्रहालय–**

भरतपुर का सरकारी संग्रहालय भरतपुर के सभी निवासियों और यात्रियों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। लोहागढ़ किले के दिल में स्थित, इसे १९४४ ईस्वी में एक संग्रहालय में बदल दिया गया था। संग्रहालय में एक आर्ट गैलरी भी है जिसमें पिपल पेड़, मीका और पुराने लिथो पेपर की पत्तियों पर लघु चित्रों के नमूने शामिल हैं। इस संग्रहालय में मुख्य रूप से पत्थर की मूर्तियां, शिलालेख, टेराकोटा आइटम, धातु वस्तुएं, सिक्के, हथियार, लघु चित्र और स्थानीय कला शामिल हैं। ये सभी चीजें इस क्षेत्र की समृद्ध विरासत, कला और शिल्प के बारे में बताती हैं।

**(ix) जवाहर बुर्ज**

जवाहर बुर्ज और फतेह बुर्ज लोहागढ़ किले के गौरवशाली रैपर्ट के भीतर खड़े हैं। इस साइट को सभी जाट शासकों के लिए कोरोनेशन साइट के रूप में माना जाता था। उन्हें महाराजा सूरजमल ने मुगलों और अंग्रेजों पर अपनी जीत मनाने के लिए बनाया था। इन दो स्थानों को विजय टावर के रूप में माना जाता है और, बिगडती भित्तिचित्रों से सजाए गए हैं। यह राज्य के अन्य किलों से अलग है जिसमें किले के साथ कोई झुकाव नहीं है। हालांकि, यह ताकत और भव्यता का एक आभा उत्पन्न करता है।

**(x) बृज महोत्सव –**

बृज उत्सव या बृज महोत्सव हर साल भरतपुर शहर के बृज क्षेत्र में मनाया जाने वाला एक लोकप्रिय त्योहार है। बता दें कि यह त्यौहार मार्च के महीने में मनाया जाता है, जिससे सभी जाती के लोग भगवान कृष्ण में अनन्त समर्पक का जश्न मनाने के लिए एक साथ इकट्ठा होते हैं। इस त्यौहार की एक अनूठी विशेषता रासलीला नृत्य है। इस खास मौके पर लोग बाणगंगा नदी के पवित्र जल स्नान करते हैं।

**(xi) मोती झील एवं सुजान गंगा नहर**

मोती झील बाणगंगा नदी एवं सुजान गंगा नहर के संगम पर निर्मित महत्वपूर्ण झील है। इसे भरतपुर की जीवन रेखा भी कहा जाता है। पर्यटन की दृष्टि से इस झील का महत्व अत्यधिक है क्योंकि झील के आस-पास पाई जाने वाली आर्द्रभूमि जैव विविधता सम्पन्न प्रदेश है।

सुजान गंगा नहर १७४३ से १७५१ के मध्य राजा सूरजमल द्वारा भरतपुर किले का निर्माण करवाया, इस दुर्ग के चारों ओर करीब ५ किमी सुजान गंगा नहर बनवाई थी

वर्तमान में नहर को पर्यटन की दृष्टि से पुनर्निर्मित एवं सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है। पर्यटक अब सुजानगंगा नहर में वोटिंग का लुत्फ भी उठा सकेंगे।

**परिणाम व विश्लेषण**

**तालिका - १**

**भरतपुर आने वाले देशी-विदेशी पर्यटक (वर्ष २०१२-२०२३)**

| क्र. सं. | वर्ष | देशी | विदेशी | कुल |
|---|---|---|---|---|
| १. | २०१२ | ६७६७६ | ४१३२६ | १०९००२ |
| २. | २०१३ | ६९३७० | ४३१६६ | ११२५३६ |
| ३. | २०१४ | ६९२२५ | ४०३८० | १०९६०५ |
| ४. | २०१५ | ६६३२२ | ३९६०८ | १०५९३० |
| ५. | २०१६ | ७२७६१ | २६३६८ | ९९०६९ |
| ६. | २०१७ | १११७९६ | १८३९८ | १३०१९४ |
| ७. | २०१८ | १३६८६३ | १७४१३ | १५४२७६ |
| ८. | २०१९ | १५७१८८ | २०७४९ | १७७९३७ |
| ९. | २०२० | ७९३५१ | ५५३८ | ८४८८९ |
| १०. | २०२१ | १४१४९६ | ११० | १४१६०६ |
| ११. | २०२२ | ७५६८६१७ | २७४९ | ७५७१३६६ |
| १२. | २०२३ | १०५५१३१२ | ११९३३ | १०५६३२४५ |

**स्रोत :- प्रगति प्रतिवेदन (२०१३ -२०२४) पर्यटन विभाग (RTDC)] जयपुर।**

**आरेख संख्या-०१**

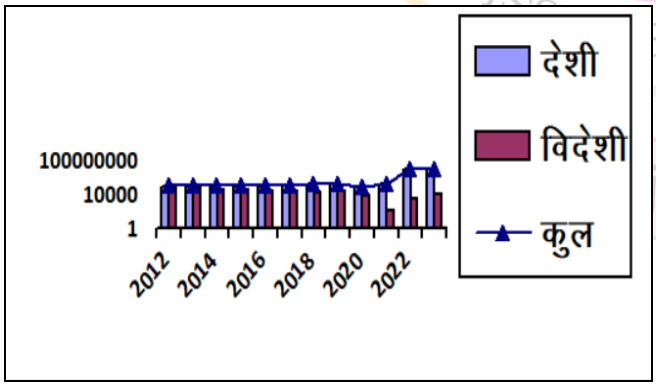


उपरोक्त तालिका-१ से ज्ञात होता है कि वर्ष २०१२-२०२३ के बीच पर्यटकों की संख्या में एक करोड़ से भी अधिक की मात्रात्तमक वृद्धि हुई। शुरू के पाँच-सात वर्षों तक आंकड़े लगभग स्थिर थे। हालांकि विदेशी पर्यटकों के आगमन में कमी का सतत प्रारूप दर्शित हुआ। वर्ष २०१९-२० के बीच माइनस ५२ प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि कोविड महामारी के प्रभाव को दर्शाती है, किंतु अगले ही वर्ष में पर्यटकों का आगमन करीब ६७ प्रतिशत बढ़ गया। वर्ष २०२१-२२ में यह वृद्धि लगभग ७० लाख (५३ गुना), एवं २०२२-२३ में पिछले वर्ष से करीब ३० लाख अधिक रही।

**पर्यटन एवं पर्यावरणीय प्रभाव**

(i) पर्यटन के सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव

पर्यटन एक बहुआयामी प्रवृत्ति है जिसका प्रभाव न केवल मानव अपितु पर्यावरण पर भी पड़ता है। यह एक स्थानीय परिघटना होने के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय फलक पर भी विस्तृत है। पर्यटन के सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों की जांच करने के लिए प्रश्नावली साक्षात्कार का आयोजन किया गया, जिसके निम्न परिणाम परिलक्षित हुए।

**तालिका - २**

**पर्यटन का सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव**

| क्र. सं. | प्रभाव | सहमत | | असहमत | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्यक्तियों की संख्या | प्रतिशत | व्यक्तियों की संख्या | प्रतिशत |
| १. | स्थानीय पर्यावरण की गुणवत्ता सुधरी है। | १२० | ६०% | ८० | ४०% |
| २. | प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रोत्साहन मिला है। | ११० | ५५% | ९० | ४५% |
| ३. | स्थानीय स्वच्छता को बढ़ावा मिला है। | १४० | ७०% | ६० | ३०% |
| ४. | शुद्ध वातावरण का निर्माण हुआ है। | ११६ | ५८% | ८४ | ४२% |

स्रोत :- क्षेत्र अध्ययन जनवरी मार्च २०२२

१. स्थानीय पर्यावरण की गुणवत्ता सुधरी है।

२०० व्यक्तियों के मध्य किये गये सर्वेक्षण किया गया। जिसमें से ६० प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधर आया है। वहीं लगभग ४० प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि पर्यावरण की गुणवत्ता पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है।

२.प्राकृतिक पर्यावरण को प्रोत्साहन मिला है।

व्यक्तियों के मध्य किये गये सर्वेक्षण से पता लगा कि लगभग ५५ प्रतिशत व्यक्ति ये मानते हैं कि प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा को प्रोत्साहन मिला है, जबकि अन्य ४५ प्रतिशत व्यक्तियों का मानना यह है कि पर्यावरण की सुरक्षा को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला।

३. स्थानीय स्वच्छता को बढ़ावा मिला है।

सर्वेक्षण के ७० प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्थानीय स्वच्छता को बढ़ावा मिला है। इसका कारण यह बताया गया कि पर्यटन के प्रभाव से लोगों के मध्य जागरूकता बढ़ी है। वहीं ३० प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना यह है कि पर्यटन के फलस्वरूप स्वच्छता को बढ़ावा नहीं मिला है।

४. शुद्ध वातावरण का निर्माण हुआ है।

सर्वेक्षण के ५८ प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि पर्यटन के प्रभाव से शुद्ध वातावरण का निर्माण हुआ है। वहीं सर्वेक्षण के ४२ प्रतिशत प्रतिभागी इस तथ्य से इंकार करते हैं कि शुद्ध वातावरण का निर्माण हुआ है।

भरतपुर शहर का प्राकृतिक पर्यावरण बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ का प्राकृतिक पर्यावरण तथा पर्यटन एक-दूसरे से अंतर्सम्बन्धित है।

(ii)पर्यटन के नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव

किसी भी क्रियाविधि के दो पहलू होते हैं। पहला पहलू उसके सकारात्मक तथ्यों की ओर संकेत करता है वहीं दूसरा पहलू नकारात्मक तथ्यों की ओर संकेत करता है। यदि पर्यटन की बात करें तो पर्यटन पर भी यह पहलू लागू होते हैं। पर्यटन के सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव होने के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई देते हैं।

**तालिका - ३**

**पर्यावरण पर पर्यटन के नकारात्मक प्रभाव**

| क्र. सं. | प्रभाव | सहमत | | असहमत | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्यक्तियों की संख्या | प्रतिशत | व्यक्तियों की संख्या | प्रतिशत |
| १. | पर्यावरण की गुणवत्ता में कमी आई है क्योंकि विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों में वृद्धि हुई है। | १३० | ६५% | ७० | ३५% |
| २. | नदी, झील के किनारे लोगों ने निवास बनाकर पारिस्थितिक संकट उत्पन्न कर दिया है। | १५० | ७५% | ५० | २५% |
| ३. | प्राकृतिक धरातल के विपरीत नवीन गृहों का निर्माण हुआ है। | १३४ | ६७% | ६६ | ३३% |
| ४. | वृक्ष कटाई, उद्यान भूमि की कमी से तापमान में वृद्धि हुई है। | ११४ | ५७% | ८६ | ४३% |
| ५. | जैव विविधता के समक्ष खतरा उत्पन्न हुआ है। | १२८ | ६४% | ७२ | ३६% |

स्रोत :- क्षेत्र अध्ययन जनवरी मार्च २०२२

(i)पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट आई है

सर्वेक्षण के ६५ प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि प्राकृतिक पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट आई है क्योंकि

पर्यटन में वृद्धि के फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों में वृद्धि हुई है, जिनमें ध्वनि प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण मुख्य हैं। विभिन्न प्रकार के यातायात साधन ध्वनि एवं वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोत हैं। वहीं ३५ प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि पर्यावरण की गुणवत्ता में कोई गिरावट नहीं आई है।

(ii)नदी-झील के किनारे लोगों ने निवास बनाकर पारिस्थितिकी संकट उत्पन्न कर दिया है।

सर्वेक्षण के ७५ प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि लोगों ने नदी-झील के किनारे अवैध निवास बनाकर पारिस्थितिक संकट उत्पन्न कर दिया है। निर्माण के फलस्वरूप झील-नदी के किनारे पाये जाने वाले विविधि प्रकार के जीव-जंतु तथा वनस्पति का विनाश हो गया है। वहीं २५ प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि पर्यटन से किसी प्रकार का पारिरिणतिक संकट उत्पन्न नहीं हुआ है।

(iii)प्राकृतिक धरातल के विपरीत नवीन गृह निर्माण हुआ है।

६७ प्रतिशत व्यक्तियों का मत है कि पर्यटन के कारण शहरी जनसंख्या में वृद्धि हो रही क्योंकि लोग ग्रामीण क्षेत्रों से भरतपुर शहर की ओर प्रवास कर रहे हैं। उनकी आवास आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए प्राकृतिक धरातल के विपरीत नवीन गृह निर्माण हुआ है। वहीं ३३ प्रतिशत व्यक्तियों को ऐसा नहीं लगता है।

(iv) वृक्ष कटाई उद्यान भूमि की कमी से तापमान में वृद्धि हुई है।

यह न केवल स्थानीय वरन् अंतर्राष्ट्रीय समस्या है क्योंकि इन कारणों से ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि हो रही है।

- ५७ प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है पर्यटन के फलस्वरूप वृक्ष कटाई को बढ़ावा मिला है क्योंकि नवीन आवास निर्माण तथा व्यापार-वाणिज्य गतिविधि के लिए प्रतिष्ठान निर्माण हुआ है जो शहरी हीट आइलैण्ड (तप्त द्वीप) के निर्माण में सहायक है।
- ४३ प्रतिशत व्यक्तियों का मत इसके विपरीत है उनका मानना है कि शहरी वातावरण में इनका योगदान अत्यंत निम्न है।

(v) जैव विविधता के समक्ष खतरा उत्पन्न हुआ है।

सर्वेक्षण के ६४ प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि पर्यटन के परिणामस्वरूप जैव विविधता में ह्रास हुआ। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में विभिन्न पर्यटन गतिविधियों ने जीव जंतुओं के समक्ष खतरा उत्पन्न कर दिया है। इसके विपरीत ३६ प्रतिशत उत्तरदाता इस तथ्य को स्वीकार करने से इंकार करते है।

**पर्यटन एवं सांस्कृतिक प्रभाव**

पर्यटन से किसी भी क्षेत्र की संस्कृति में परिवर्तन अवश्य देखने को मिलता है क्योंकि किसी भी क्षेत्र में आने वाला पर्यटक चाहे वो देशी हो अथवा विदेशी हो अलग भौगोलिक स्थान से आता है उसकी अपनी सांस्कृतिक विरासत होती है। जब दोनों सांस्कृतिक विरासत मिलती है तो सांस्कृतिक परिवर्तन अवश्य होता है। यह सांस्कृतिक परिवर्तन सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के होते हैं।

भरतपुर शहर में आने वाले पर्यटकों और बढ़ते पर्यटन उद्योग ने यहाँ भी सांस्कृतिक परिवर्तन किया हैं। वर्तमान में इस क्षेत्र में उन मेलों तथा त्यौहारों को अधिक उत्साह व उमंग से मनाया जाता है जो पर्यटकों को आकर्षित करने में सफल हुए है। इस क्षेत्र में जसवंत पशु प्रदर्शनी, नौटंकी का आयोजन बृज महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

***पर्यटन के सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव***

**तालिका - ४**

**पर्यटन के सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव**

| क्र. सं. | प्रभाव | सहमत | | असहमत | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्यक्तियों की संख्या | प्रतिशत | व्यक्तियों की संख्या | प्रतिशत |
| १. | पारस्परिक संस्कृति का विस्तार हुआ है। | १४५ | ७२.५०% | ५५ | २७.५०% |
| २. | अन्य भाषाओं का विस्तार हुआ है। | १४९ | ७४.५०% | ५१ | २५.५०% |
| ३. | देश विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति तथा विदेशी संस्कृति से संपर्क बढ़ा है। | १६३ | ८१.५०% | ३७ | १८.५०% |

स्रोत- क्षेत्र अध्ययन जनवरी-मार्च २०२२

पर्यटन एक ऐसा अनूठा क्षेत्र है जो स्वयं प्रभावित होते हुए विभिन्न देशों की संस्कृतियों को प्रभावित करता है। इससे न केवल सांस्कृतिक सौहार्द में वृद्धि होती है वरन् संस्कृति सम्बन्धी जानकारी में भी वृद्धि होती है।

(i) पारस्परिक संस्कृति का विस्तार हुआ है –

- स्थानीय सर्वे के दौरान ७२.५ प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि पर्यटन के फलस्वरूप स्थानीय या पारम्परिक संस्कृति का विस्तार हुआ है।
- वहीं २७.५ प्रतिशत व्यक्तियों का मत इसके विपरीत है उनका मानना है केवल पर्यटन से ही पारम्परिक संस्कृति का विस्तार नहीं हुआ है।

(ii) अन्य भाषाओं का विस्तार हुआ है –

- सर्वे में ७४.५ प्रतिशत व्यक्तियों का मानना था कि पर्यटन से विभिन्न भाषाओं का विस्तार भरतपुर शहर में हुआ है उनमें प्रमुख भाषा है अंग्रेजी, इटैलियन, फ्रेंच आदि। वहीं २५.५ प्रतिशत व्यक्तियों का मत इसके विपरीत है।

(iii) देश के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति तथा विदेशी संस्कृतियों से सम्पर्क बढा है।

- सर्वे में ८१.५ प्रतिशत व्यक्तियों का मानना था कि पर्यटन से स्थानीय तथा विदेशी संस्कृतियों से सम्पर्क बढ़ा है। वहीं १८.५ प्रतिशत व्यक्तियों का मत इसके विपरीत था।

***पर्यटन के नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव***

**तालिका – ५**

**पर्यटन के नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव**

| क्र. सं. | प्रभाव | सहमत | | असहमत | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | व्यक्तियों की संख्या | प्रतिशत | व्यक्तियों की संख्या | प्रतिशत |
| १. | प्राचीन इमारतों एवं ऐतिहासिक स्थलों का विनाश हुआ है। | १५४ | ७७% | ४६ | २३% |
| २. | परम्परागत जीवन शैली एवं विश्वास खण्डित हुआ है। | १४५ | ७२.५० % | ५५ | २७.५० % |

स्रोत- क्षेत्र अध्ययन जनवरी-मार्च २०२२

पर्यटन न केवल सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव दृष्टिगत होते हैं वरन् पर्यटन के नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव भी दिखाई पडते हैं।

(i)प्राचीन इमारतों एवं ऐतिहासिक स्थलों का विनाश हुआ है।

स्थानीय सर्वे के दौरान ७७: व्यक्तियों का मत था कि पर्यटन से प्राचीन इमारतों एवं ऐतिहासिक स्थलों का विनाश हुआ है।

वहीं २३ प्रतिशत व्यक्तियों का मत इसके विपरीत था उनका मानना था कि पर्यटन से प्राचीन इमारतों तथा ऐतिहासिक स्थलों का विनाश नहीं हुआ है।

(ii) परम्परागत जीवन शैली एवं विश्वास खण्डित हुए है।

- सर्वेक्षण के दौरान ७२.५ प्रतिशत व्यक्तियों का मानना था कि विभिन्न देशों की संस्कृतियों तथा रीति-रिवाज के सम्पर्क में आने से शहर की परम्परागत जीवन शैली एवं विश्वास खण्डित हुए हैं। वहीं २७.५ प्रतिशत व्यक्तियों का मत इसके विपरीत है।

अतः बढ़ते पर्यटन से सांस्कृतिक पर्यावरण में परिवर्तन तो हुआ है लेकिन ऐसे प्रयास करने चाहिए जिससे हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत इसके नकारात्मक प्रभाव से बच सके।

## निष्कर्ष

भरतपुर शहर में कोविड काल में पर्यटक आगमन में कुछ कमी आई, किंतु २०२१ से पुनः वृद्धि दिखाई पड़ने लगी। वर्ष २०२३ में तो वृद्धि का विशिष्ट बढ़ा हुआ स्वरूप दर्ज किया गया। पर्यटन वृद्धि व विकास के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव भरतपुर गंतव्य के वासियों ने पर्यावरणीय व सांस्कृतिक मंडलों पर अनुभूत किये। इनका समुचित प्रबंधन किए जाने पर ही टिकाऊ पर्यटन विकास का लक्ष्य प्राप्त हो पाएगा।

**आभार-व्यक्तिः-**

प्रथम लेखक यूजीसी का आभारी है जिसके अनुदान के फलस्वरूप यह शोध-कार्य संभव हो सका।

**संदर्भ**

1. कैमार्डा डी, ग्रसनी एल (२००३) "पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभाव" सिहेम।
2. झोग लिशेंग, डेंग जिनयांग, सांग्ग जेंगवेन, डिंग पेइयी (२०११) "चीन में पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभावों पर शोध : प्रगति और संभावना" जर्नल ऑफ एनवायर्नमेंटल मैनेजमेंट ९२(११), २९७२–२९८३
3. प्रैट स्टीफन (२०१५) "एसआईडीएस में पर्यटन का आर्थिक प्रभाव" पर्यटन अनुसंधान के इतिहास ५२, १४८–१६०
4. फैइसा विचाका, नसिया क्रिस्चियन, तदासने बडासा (२००८) "अफ्रीका में आर्थिक वृद्धि और विकास पर पर्यटन का प्रभाव" पर्यटन अर्थशास्त्र १४(४), ८०७–१८१८
5. ब्राउर देने, दिमित्री मिरेक, ट्राइब जॉन (२०१९) "पर्यटन अनुसंधान का प्रभाव" पर्यटन अनुसंधान के इतिहास ७७, ६४–७८
6. प्रमाणिक वी.डी., इंगकादिजया आर (२०१८) "पर्यटन का ग्रामीण समाज और उनके पर्यावरण पर प्रभाव" आईओपी सम्मेलन श्रृंखला, पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान १४५(१), ०१२०६०
7. गोडोविख मक्सिम, हसीकारा अहमत, बेकर कैरिसा, फसाल एलन, पिजाम अब्राहम (२०२४)"पर्यटन के कथित प्रभावों को मापना : एक विराट पैमाने पर अध्ययन" कर्टेंट इश्यूज इन ट्यूरिज्म २७(१५), २५१६-२५३२
8. हक आशिफुल, शिखा अफरीन फरजाना, हसनत बलीउल मोहम्मद, आरिफ इश्तियार, हामिद अब्दुल बकर अबू (२०२०) "चीन के पर्यटन उद्योग पर कोरोना वायरस का प्रभाव" एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज ३(१), ५२–५८
9. प्रगति प्रतिवेदन, पर्यटन विभाग] (RTDC) राजस्थान।
10. मास्टर प्लान भरतपुर (२०३०)
11. जनगणना २०११ (भारत सरकार)
12. हुंजीकर एवं क्राफ्ट (१९८५) की पुस्तक "कोटेड फ्रॉम फास्टर, हुगलस; ट्रेवल्स एवं ट्यूरिज्म मैंनेजमेंट" मैकमिलन, लंदन।
13. कथूरिया रेणु (२०११) "पर्यटन विकास " श्रुति पब्लिकेशन, जयपुर।
14. https://www.javatpoint.com/tourist-places-in-bharatpur
15. गुप्ता मोहनलाल (२०११) "भरतपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन" राजस्थान ग्रंथागार, जोधपुर।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com